जमीन से जुड़ते हुए

रेवती रमण शर्मा

प्रभात किरण प्रकाशन
अलवर (राज०)

जमीन से जुड़ते हुए



काव्य-संकलन





प्रथम आवृत्ति



जनवरी 1978



मूल्य . आठ रुपये मात्र

प्रभात किरण प्रकाशन
मालाखेड़ा दरवाजा, अलवर



शर्मा ब्रदर्स इलैक्ट्रोमैटिक प्रेस, अलवर

अनुक्रम

पूर्वा

उत्तरा

जुगमन्दिर तायल के लिए



पूर्वा



मैंने
कोरे कागज़ पर
एक सुन्दर नारी
रेखाङ्कित की,
वह आँखो से
आँसू टपकाकर
अदृश्य हो गयी,
मन रोने लगा
अकेला अकेला,

फिर साथ के लिए मैंने
कोरे कागज पर
एक झोंपडी बनायी
और एक पौली,
पौली के मेहमान
हुक्का गुडगुड़ाते
धुआँ मे अदृश्य हो गये
झोंपडी में
किसी अज्ञात व्यक्ति ने
आग लगा दी

बहुत से चित्र सँजोये
सफेद कागज पर रग भरे,
सब रग दगाबाज और
बदरग रहे
सफेद कागज पर
मेरी सान्त्वना के लिए
अब कुछ नही बचा है,
काले धब्बों के सिवा.

काठ का आदमी
देखा साब आपने
इस बच्चे की माँ
मर गई है सामने
दो गज कफन चाहिए
मिट्टी को उठाने
सीखा है बच्चे ने
बने रहना
'काठ का आदमी'
उल्लू का पट्ठा है
किन्तु टायर को पसीना नहीं आता है
वह काला होता है

सिसकता-सा खिसकता है
काठ का आदमी
ठूँठो के ठूठ करता है एकत्र
लाता है औजार
बनाता अपनी शक्ले
करता है कितनी नक्लें
इधर से, उधर से, सब तरफ से
सामने सडक पर आता है
उदास रोते चेहरे को
हाथ पर उठा लाता है.

बिकते हैं काठ के आदमी
आदमी के वास्ते आदमी
आदमी खरीदता है
काठ का आदमी.

अनुभूति

तुमने सड़क पर चलते
आदमी का चेहरा देखा है ?
दर्द ढोता
......लगता है दर्द लादवा है.
तुमने सडक पर चलती
परछाई देखी है ?
मुझे हर आदमी के साथ
जीवित मौत दिखती है.
तुमने रास्ते मे आँखें
बिछी देखी है
मुझे महसूस होता है
लोग आँखो पर चलते है.
तुमने अँधेरे मे शहर देखा है ?
मुझे धरती मे गडे
मुर्दे दिखते है बातें करते
तुमने भीड देखी है
निराश भीड......
जिसके हाथों मे पेट रखा है.

अनुभूति

तुमने सड़क पर चलते
आदमी का चेहरा देखा है ?
दर्द ढोता
......लगता है दर्द लादवा है.
तुमने सडक पर चलती
परछाई देखी है ?
मुझे हर आदमी के साथ
जीवित मौत दिखती है
तुमने रास्ते मे आँखें
बिछी देखी है
मुझे महसूस होता है
लोग आँखो पर चलते हैं.
तुमने अँधेरे मे शहर देखा है ?
मुझे धरती मे गडे
मुर्दे दिखते हैं बातें करते
तुमने भीड देखी है
निराश भीड......
जिसके हाथो मे पेट रखा है.

मुक्ति

उसने एक घूंसा ग्रौर लगाया
ग्रपने मुँह पर
एक ग्रर्से से
वह सूखे चेहरे पर हँसी नही लौटा पाया था.

उसने एक तमाचा ग्रौर लगाया
उसके मुँह पर
एक ग्रर्से से
वह उसके लिए कुछ नही जुटा पाया था

उसने उसे भी एक रसीद काटी
जो एक ग्रर्से से
लगातार भूख की शिकायत करता था.
उसने ग्रपने ही हाथो
उन सबका गला दबा दिया
उसने ग्रपने ही हाथो
समता के स-विधान से
ग्राखिरी बार हाथ सेंके

प्लेटफार्म से कुछ ग्रागे
ग्रंधकार के साक्ष्य में
काले मुह के राक्षस से टकरा
मुक्ति पाई थी उसने.

कुछ दिनों वाद
लोगो ने पुलिस मे रपट लिखाई
कातिल फरार है

मुक्ति

उसने एक घूंसा ग्रौर लगाया
ग्रपने मुँह पर
एक ग्रर्से से
वह सूखे चेहरे पर हँसी नही लौटा पाया था

उसने एक तमाचा ग्रौर लगाया
उसके मुँह पर
एक ग्रर्से से
वह उसके लिए कुछ नही जुटा पाया था.

उसने उसे भी एक रसीद काटी
जो एक ग्रर्से से
लगातार भूख की शिकायत करता था.
उसने ग्रपने ही हाथो
उन सबका गला दबा दिया
उसने ग्रपने ही हाथों
समता के स-विधान से
ग्राखिरी बार हाथ सेके

प्लेटफार्म से कुछ ग्रागे
ग्रंधकार के साक्ष्य मे
काले मुह के राक्षस से टकरा
मुक्ति पाई थी उसने.

कुछ दिनो बाद
लोगो ने पुलिस मे रपट लिखाई
कातिल फरार है

अन्त तक

वे सब क्यों
मेरे तेज़ तर्रार विचारों/संभाषणों को
क्रान्ति की मरीचिका पुकारते है ?
क्रान्ति, जोर/जुल्म के पैने हथियार से
कुचली जा सकती तो
क्या क्रान्ति होती ?

वे मुझे
उच्छृङ्खल/अराजकतावादी कहते हैं
वे पूछते हैं
गुलामी क्या होती है ?
मुझे कबूतर की गर्दन
बिल्ली के मुँह में दिखाई देती है.
वे कहते हैं
हजार साल की गुलामी क्या ज्यादा होती है ?
मैं कहता हूँ
अगला हादसा पिछले से बडा हो सकता है.

शक्तिशाली भेड़ियों की जीभ लपलपाते
कतारें पंक्तिबद्ध हैं
जंगल के जानवर
खुद का पेट भरने से पहले
उनका आहार होते है

आखिर कब तक
ऊँट भेडिये को अपना पेट फाड़ने देगा
अथवा खरगोश
किसी माँद मे आहार होता रहेगा ?
लपलपाती जीभ से
माँद मे या मैदान मे
खरगोश, ऊँट और मेरा
लडाई का यह दौर जारी रहेगा

मै धीरे से कहता हूँ
शोषण की सत्ता की समाप्ति तक.

समय-सापेक्ष

मैं जानता हूँ
नदी की धार के खिलाफ
चलना कितना कठिन होता है
और ताकत के बाहर भी.

मै जानता हूँ
हवा/तूफान के खिलाफ बढ़ना
कितना घातक होता है
और सामर्थ्य के बाहर भी.

मैं जानता हूँ
तुम्हारी ताकत के विरोध मे
सीधा खम ठोक खड़ा होना
दुष्कर और कठिन है.
तुम्हारा चाबुक मेरी खाल से कोमल नही होता

मैं जानता हूँ
अस्तित्व के लिए
अपना जीवन दाव पर लगाना
कितना जरूरी होता है.

समय-सापेक्ष हूँ मैं
तुम्हारी हर अच्छी बात के समर्थन का
अर्थ
तुम्हारी मूर्खता से सहमत होना
नही होता है.

काला नाला

वे सब गन्दे नाले के पास
क्यों खड़े हैं ?
एक गहरी नफरत के बावजूद

नाले के पानी से अब
खेत नहीं सींचे जाते
उसका पानी काला हो गया है

गन्दे नाले का पानी
अब सबका नहीं
किसना सेठ ने
पुलिस/असरदार लोगों की मदद से
अपने घर लाकर
बन्द कर दिया है.

कितना अन्तर हो गया है
मुझमें और किसना सेठ में
हम कभी फटी निकर पहने
स्कूल जाते थे.
मैं अभी वहीं हूँ—भूख से लड़ता हुआ
और वह
काले नाले से—सेठ हो गया है.
सन्देहों को धोता
संभावनाओं को जन्माता
लगातार बढ़ता है
सबके आगे !
सबके सामने

प्रत्यावर्तन

लोगों ने
दुम हिलाना
फिर शुरू कर दिया है
मेरा एक दोस्त
इनसे बचकर रहता है

वह अपना मुकाम खाली कर गया है
इन सब से मुक्त हो
कहाँ गया होगा वह
मैं नही जानता

मुल्लन ख्याली का
कहता है
धरती से उठ
उसने पटरी पकडी थी
अब
पटरी से भी रिश्ता टूट गया है.

चील ने पूरी ताकत से
आँगन की गोरय्या
तीतर और बटेरों पर ही
सबसे पहले प्रहार किए है

यहूदी

मन की पखहीन उड़ान
कहाँ ले जायगी मुझे ?
साइबेरिया से घना
और घना से साइबेरिया
सदा की तरह या कहीं अन्यत्र ?

भटका है मन इस बार
जोर्डन, सीरिया और गोलन पहाड़ियों के बीच
लाल सागर से साइबेरिया जा नहीं पाता है

कितने रक्तपायी होते हैं लोग
उन्हें आज भी
एन्टोनियो के कलेजे का खून चाहिये.

गरम बालू में पिशाब करने से
रेत ठण्डी नहीं होती
देश निकाले से देश पराया
नहीं होता है.
किसी की जाँघ खरोंचना
शीर्षस्थ सभ्यता के लिए
क्या जरूरी होता है ?

शान्ति के लिए

शान्ति के लिए
अब मुझमे
सहिष्णुता और संवेदना ही
शेष रह गई है

शान्ति के अभाव मे
उत्तेजना–
मेरे मस्तिष्क को
पगला रही है लगातार
एक तनाव जो बना ही रहता है
कोई न्यूट्रोन बम लिए रहता है ?
जिसके विस्फोट का खयाल
मुझे कब नही रहता ?

मेरी तरह वे सब
शान्ति के लिए
कितने हैं लालायित
लेकिन
तनाव एक बार, जहाँ भी बढ़ गया,
बढ़ गया.
तनाव-शैथिल्य समझौतों पर
अक्ल की तालाबन्दी हो गई है
शान्ति प्रस्तावों के हर वाचन पर
हो गया है–कही न कही कोई विस्फोट.

सिलाई की मशीन के
एक ही धागे से सीते रहे है शान्ति
अगणित छिद्रों के बावजूद
शान्ति का बखिया उधड़ता ही
चला गया है.

कौन कहता है
मौत से डरता हूँ मैं ?
मैं मौत के साथ रहता हूँ
फिर भी जीता हूँ
मरता सा जीता हूँ

कौन कहता है
मेरी तन्द्रा आरोपित नही है ?
मैं जागता सोता हूँ
या सोता सा जागता हूँ
किस अचेतन यथास्थिति मे
जीने का आदी हो गया हूँ

लेकिन क्या कसूर है मेरा ?
जोड़ तो तोंदधारी/कुर्सीधारी लोग हैं
मेरी सारी जमा पूँजी के
मैं तो केवल
महाजनी हिसाब की हाँसिल हूँ
हाँसिल करने की प्रक्रिया मे
जोडने की क्रिया हूँ

हिजड़ाई व्यवस्था मे
मैं लघुत्तम हूँ
या कि पौरुष मेरा
छीन लिया गया है संगीनों के बीच

सड़क किनारे के
कूड़े के ढेर से

रद्दी बटोरना या
रेल की पटरी मे
कोयला चुराना
मेरा अस्तित्व बन गया है.

गली की शान्ति का
सन्नाटा तोडता हूँ
या कभी पागलो सा दौड़ता हूँ
पत्थर फेंकते हैं बालक
करते है शोर
"पागल है, पागल है"

कौन कहता है
पागल हूँ मैं ?
सिर्फ इसलिए कि
मुझे जीवन या मृत्यु बोध नही है.
जीवन और मृत्यु के बीच
जीने की विवशता हूँ मैं.

रोज रात को जागता है शहर
पास का गाँव अवचेतन है—मेरी तरह.
चेतना की जडों मे पाला पड़ा है
शहर से गाँव जाते
मेरे सिर पर ओले पड़े हैं
खेत की हर मुण्डेर पर,
रक्षक बन खड़े है बिदकने,
लहलहाती फसल को
तुम्हारे सिवा क्या आसमान निगल गया ?

कहाँ नही हो तुम ?
यत्र-तत्र-सर्वत्र.

हंस-विवेक

पीले चेहरे का दर्द
ग्रनपढ़ रह जाता है

सूनी ग्रांखों के ग्रागे
घूमते हैं—काले चोगे पहने भूत
लड़ते हुए जवानी
विभ्रम सिंहासन के ग्रागे

गीता-कुरान की शपथ से
शुरू होती हैं बहस

समझौता करने ग्राते हैं
'बीच के लोग'
मौत की धमकी के साथ

हंस
ग्रांख मूंद
करता है—'नीर-क्षीर-विवेक'

बाइज्जत बरी होता है
बेटे का हत्यारा
जाब्ता फौजदारी की किताब
ले उड़ता है बाज़

माँ के दर्द की चीख़ में
सम्राती है ग्रदालत.

विड़म्वना

कैसी विचित्रताएँ हैं ?
चिडियाम्रो के सीग
श्रौर गदहों के कलंगी.

कैसी विडम्वनाएँ हैं ?
सूरज मे ठण्डी लहर
चांद में श्राग सुलगती है.

सिरिञ्ज-भर-खून विकता है
खून बनाने को
होते हैं सभाम्रों में भापरण
खून-क्रेताम्रो के

सर्वहारा वर्ग को
क्रान्तियाँ वाँटते हैं
लुबलुबे लटकते पेट
सत्ता का दलाल कहा जाता है
पिचके-पेट-वाला.

कैसी विवशता है ?
कब तक होता रहेगा
मत्स्य पालन—
घड़ियालो के वास्ते ?

मेरे गाँव में

मेरे गाँव में,
कल भी वसन्त था,
आज भी है, और कल भी रहेगा.
मेरे बूढ़े गाँव में,
एक सामन्ती साँप था,
जो मेरे गाँव वालों पर
फुफकारता और आग उगलता
लोग उसे दूध पिलाते
लेकिन दूध उसे रास नही आया
वह नरभक्षी बन गया.

जब विनाश की पराकाष्ठा हुई
लोग उठ खड़े हुए–एक साथ
सामन्ती साँप का फन कुचल दिया गया.

मेरे गाँव मे, लोगों को
फिर भी वसन्त नही आया
एक साँप मरा
अनेक गोहरे आ बसे हैं
मेरे गाँव मे,
गोहरो को आने लगा है वसन्त अब.

साँप सर पर मणि रखता था
गोहरे बहुरगी टोपी पहनते हैं
मेरे गाँव मे—
वसन्त इन टोपियो पर उतरता है.

सर्व भूमि गोपाल की नहीं
दूर बहुत दूर
आसमान से मिलती धरती
अब गोहरों की हो गई है

हवा

एक अर्से बाद
तूफानी हवा चली है
उखडने लगे हैं
बडे बडे पेड

हवा बहने से
रोकी नही जा सकेगी
हवा खाती कार को
अवरुद्ध करती है हवा

गगनचुम्बी अट्टालिकाओं से
रुक नही पायेगी
हाथियो को भी उडने का
भय सताने लगा है

आग को और तेज़ करती है हवा
बाँस के घने जंगल मे
पहुँच गई है आग
दूर दूर फैल गई है आग
फटे कुर्ते और अंगरखे तक
हवा के साथ

रुक नही पायेगी यह हवा
यहाँ से वहां तक
सारी कोशिशों के बावजूद.

अँधेरे जंगल में

गहरे अंधेरे जंगल में
पेड़ पर उल्टे लटके हैं
चमगीदड़.
घने अंधकारी जंगल मे
छुपी हैं कितनी प्रेतात्माएँ
घूमती है निर्बोध
यहाँ से वहाँ तक —
कोई पेड की खोल मे छुपी है
कोई अन्तर्धान हो
अपने न होने का देती है झूठा प्रमाण
लगा रखे हैं रगीन बैनर
जन-सेवार्थ
हवा सीटियाँ बजाती है
रौदती हैं
वृक्षों से अलगाए
सूखे जर्जर पत्तों को
नाल ठुके जूतो से
जो उड़ने को नही है स्वतन्त्र

वेदनायुक्त आती है
चरमराहट
कौन सुनता है ?
सुनने वाले भी तो वे ही हैं.

रैस्तौरॉ में

काफी के कसैले स्वाद के बीच
चीखता है
फटे कुर्ते, नंगे पैरो का
आधा आदमी
'बूट पालिश'
बहरा चिल्लाता है
भाग......ब......
कडियल मालिक
घुमाता है गोल गोल आँखें

लोग करते हैं
राजनैतिक चर्चाएँ
मँहगाई, अभाव, गरीबी
शब्दो की ध्वनियाँ उठती है
अर्थों से ऊपर
पूँजीवाद, समाजवाद,
मध्यम-मार्ग, मिक्सड इकनामी

चर्चा के विषय बदलते है
पिकासो, फिर पाब्लो नेरुदा,
अलेन्दे की मौत,
चिली में नही
शायद यही की बात है
प्लेटों मे होती है
शोर भरी क्रान्ति.

सामने आती भिखारिन
मालिक की आँख में
किरकिरी बन चुभती है
बेंहगी आखो से
पुरुष स्त्री और स्त्री पुरुष को
एक क्षण ताक लेते है.

शीशे से दिखती
रेंगती सड़क पर
ट्रक की चपेट मे
आता है रिक्शेवाला
रिक्शे को ले जाते हैं पुलिस वाले
लाल खून के धब्बे
रेस्त्रा मे घुस आते है.

रेस्त्रा मे पिंजरा
पिंजरा मे रेस्त्रा
कई कई चिड़ियां बन्द है
तैरती हैं रंगीन मछलियां
तितलियां उड़ती हैं फूलों की तलाश में
रेस्त्रां मे जंगल
जंगल में रेस्त्रां.

पानी और पानी

पानी–
अपना स्तर
सदा एक रखता है
ऊँचा हो या नीचा
हिमालय के सिर से गिरे
नदी में बहे या
समुद्र मे हो

आदमी
जरा ऊँचा होने पर
दंभी
जरा नीचा होने पर
दीन
हर स्तर पर असमान
शायद वह बिन पानी है.

कव्वों की टोली है
सब कांव-कांव करते है
अलग अलग रहते हैं
किन्तु शोक में सब
एक साथ शरीक होते हैं
आदमी क्या है ?
जन्म हुआ किसी का
भागे आते है
एक गरीब मर गया भीड़ में
आंखें फेर चल देते है
उपेक्षित उस लाश पर
कव्वे ही कांव-कांव करते है.

प्रतिबद्ध

लोग हर मौसम के गीत गाते है.
सूरज चमके : सूरज के गीत गाते है.
चांद चमके : चांद के गीत गाते हैं
जब सिर्फ जुगनू चमकते हैं
वे जुगनुओं के गीत गाते है.
लोग हर मौसम से प्रतिबद्ध है.

नुस्ख़ा

महँगाई के विरोध में
एक बड़े ग्राम जल्से में
मन्त्री जी बोले
'महँगा मत खरीदो
चीनी खाना छोड़ो'

पूछा एक श्रोता ने
श्रीमान्
सस्ता क्या है यहाँ
जिसे खाये और जियें ?

नेता से पहले
बोला दूसरा श्रोता
आश्वासन की ताजी रोटी खाओ
भाषण पीओ
और जीओ.

मित्र के नाम

तुमने अच्छा ही किया
उन्हें बेनकाब कर
वे बहुत बड़ी मात्रा में हैं.
वे बोदू चमार पर
कविता लिखते हैं
और खुरदरी भाषा की टोपी पहन
प्रगतिशील बन जाते हैं.

तुम्हारा सन्देह सही है
वे हर खेत की मेढ़,
गाँव ग्रौर चौपाल में मौजूद है.
ग्रलाव के पास सुबह
ग्राग सिकते है
ग्रौर क्षण भर में
'ग्राम ग्रादमी' मे बदल जाते है.

वे रोज राघो-जुमली की
दीनता का सचित्र परिचय
छपाते है सेठियाई लोकप्रिय ग्रखबारो मे
ग्रौर ग्रोढ लेते है नारों की रामनामी.

शाब्दिक दम लिए फिरते हैं लोग
तुमने ठीक कहा है
ग्राडम्बरी इतिहास रचता है
जिसमे हकीकत का कोई वजूद नही होता.

बे सचमुच ग्राज भी वहुत है
जो परम्परा निभाते है
ग्रौर 'बिहारी' बन जाते है.

मैंने विनम्रता से कहा
पीछे मुडो ग्रौर जाग्रो
मैं हैरत मे रह गया—
वह तेजी से मुडा
लेकिन उसका चेहरा
मेरी ग्रोर उन्मुख रहा.

आलोचना

काश इस धरती पर भी
कोई सूरज होता
और हर रात बाद
आने का अपना वादा पूरा करता

लोग ईर्ष्या करते है सूरज से
उससे ज्यादा रोशन और कुछ नही होता.
छलनाओं की कला से
रोज रूप बदल लेता है चांद
सूरज उसे क्यो चमकाता है हर रोज ?

सूरज सबसे बतियाता है,
प्रातः पक्षियों से,
दोपहर चील से,
सांझ वृक्षों की फुनगी पर आ बैठता है
कमलों को देता है प्यार का स्पर्श
अँधेरा पीता है
पहाड लांघ
सागर के खारे आंसू पीकर
धरती की प्यास बुझाता है

लेकिन उसकी मिलनसारी
गुटवादियो का आलोचना-विषय है.

गोगिया पाशा

गोगिया पाशा
कितना नकली है
तुम्हारा जादू
कितना असली है
लोगो का तमाशा.

तुम हवा से रुपये पकड़ते हो,
जबान काट लेते हो बोलते की
ओवन क्लार्क से तुम
जबान जोड़ना भी सीख गये हो.

यहाँ लोग—
जबान चाकने के बाद
अपनी जबान से
जोड़ लेते है
बोलने की आजादी छीन
हजारों जबानो से
बोलते है एक साथ

गोगिया पाशा
बड़े-बड़े जादूगर है इस देश मे
उनके सामने तुम्हारी 'रोप ट्रिक'
बकवास लगती है,

वे नोट हवा से नही पकड़ते
हवा मे उड़ाते है
तुम जमीन पर चलते हो
वे जमीन से ऊपर
एक बार सोचो गोगिया पाशा
नेता और जादूगर में कौन बड़ा है ?
एक बार नेता बनो
तुम देखोगे
पहले से बड़े जादूगर बन गये हो.

ईमानदारी

रास्तों से सदा छला गया हूँ मैं.
जिस एक रास्ते पर चला
वे दो हो गए.

रास्ते के हर मोड़ पर
दिखती है मुझे दोमुँही दुनियाँ
मेरे सोच का एक ही रास्ता है
मैंने कभी किसी रास्ते को नहीं किया ग्राह्लत
एक ही सिद्धान्त पर दृढ रहा
—चरैवेति-चरैवेति . .. ..

क्या यह जरूरी है
जीने के लिए सब कुछ करें ?
सहनशीलता पीयें, विशेषण सहें
(अवसरवादी/पदलोलुप/भृष्ट)
जिजीविषा होती है कुण्ठित
खुली सड़क के बीच

आज भी मैं
अर्जुन के तेरहवें वर्ष की तरह
जी रहा हूँ दिन.
आज की मेरी ईमानदारी (कालान्तर में)
क्या बनी रहेगी पौराणिक सदर्भ,
निरीह अजायबघर की वस्तु ?

ग़रीबी का कवच

हवा के किले
मंसूबे सारे
आकाक्षा बोलने की
मुँह पर ताले
शीर्षासन किए हैं
तरक्की के चमगादड़
जर्द जेहरों पर अनपढा दर्द
ग़रीबी का लौह कवच
पहने है गरीब
मोम की तलवार से
काट रहा शासन
तसल्ली से........धीरे धीरे.

सुवास

खुल गया है आकाश,
आसमान के बादल,
कमरे की घुटन,
गली की धुन्ध और एक अर्से से जमी काई,
सभी छटने लगे हैं.

गले और होठों के बीच फँसे
यातना और कुण्ठाओ के शिविर
कब्रगाह तलाशने लगे है.

मौसम के यकायक बदलाव से
पक्षियो ने चहचहाना फिर शुरू कर दिया है.
नीम और सिरस की सुवास
सबके घर आने लगी है–निर्बाध.

समय

: १ :

समय एक बसूला है
आदमी को हर क्षण छीलता है
छीलन चुक जाती है
बसूला फिर भी रहता है.

२ :

आयु की धूप
सब पर पड़ती है
समय का सर्प
लकीर छोड
सरपट निकल जाता है

सहिष्णु

मुझ मे भूलने का
बहुत बड़ा गुण है
तभी मैं सहिष्णु हूँ.

विधवा

चमकती हैं
बन्द खिड़की की संध से
दो आँखें
अनागत को तलाशती

अर्ध-नियन्त्रण

सरकारी नियन्त्रण
आधी मुट्ठी बन्द करता है
मुट्ठी की दरार से
खिसक जाती हैं
चीज़.

अस्पताल

डाक्टर की फीस
और दवाओं के नुस्खे के
बीच
सलीब पर लटकी
रोगी की ज़िन्दगी.

अर्थशास्त्र

गरीब आदमी का
अर्थशास्त्र
दो जून रोटी.



उत्तरा



दिन

सुबह कमरे ने
ताज़ी धूप समेटली है.
शाम
वासी धूप
मैं पार्क मे पटक आया हूँ.

नव-वर्ष

एक वृक्ष
जिसके तीन सौ पैंसठ
पत्तों को
काल भैंसा चर गया,
बारह भुज-दण्डों को भी
एक एक कर निगल गया,
एक नई कोंपल
उसी जगह
फिर प्रस्फुटित हुई है
स्वागत नव-वर्ष.

प्रभात

पड़ोस का बूढा
खाँसने लगा है
सवेरे पाँच बजे
कमेटी का भोंपू
कान भेदता है.

मन्दिर से
घन्टियों की ग्रावाज़ ग्राने लगी है.
सुनाई पड़ते हैं
लकड़हारिनों के गीत
पहाड़ जाते.

पक्षियों का शोर
ग्रौर नही सोने देगा
मुण्डेर पर बोल उठा है कव्वा
किसे ग्राना है ग्राज ?

रँभाती हैं गाय चारे को
ग्वाला दिन निकलने के साथ
दूध निकालता है.

बम बम भोले की ग्रावाज
ग्राती है द्वार से—
ग्रब तो उठना ही पड़ेगा.

किरण जाल

सवेरे
मुँह अँधियारे
सूरज आता
कंधे पर डाले
किरणों का जाल

आम्र लदे
आम्र-वृक्ष पर
माली सूरज ने
बाँध दिया किरणों का पाल

पहाड़ से उतर
मछुआरे सूरज ने
डाल दिया झील में,
किरणों का सुनहरी जाल.

झील

चचल हैं
झील की लहरें
मेरे मन की तरह.

उलझी हैं
एक दूसरी से लहरें
मेरे विचार द्वन्द्व की तरह.

हर क्षण बना जाती हैं
एक सवालिया चिन्ह '?'
झील के तन पर
मेरे सवालो की तरह.

छाया

: 1 :

चितकबरी बन गई है
सफेद बकरी
वृक्ष के नीचे.

: 2 :

मैं कितना लम्बोतरा हो गया हूँ
ओह !
सूरज मेरे पीछे खड़ा है.

साँझ

1

बूढ़ा सूरज
लाठी टेक
घाटी पार उतरता है.

2

झील में बिम्ब
सूरज का मुखड़ा
धुल गया है.

3

ढली धूप में
सिमटता अँधेरा
और सिमटने लगता है
कि शाम को
बाहर से
दरवाज़े लगाता हूँ डर.

सो गया है गाँव

सोनाली किरणे
सिमिट रही हैं
बाड़, छानो पर
बालियां चूमती
आती है हवा
धुआँ घेराती है गाँव को.

कुछ देर रँभा कर पशु
जुगाली करते हैं चरने के बाद.

रात होने से पहले
आ जाता है—अपने गाँव
खुरपा-फावड़ा लिये, हल जूड़ी वाला.

उबासियो के बीच
ब्यालू के बाद
अँधेरे के सन्नाटे में
करवट लेता है.

निर्मन गाँव
सोया है शान्त
अँधेरे की चादर तान.

वसंत

मयूर मन
नाच रहा
बौराया आम.

फव्वारा

फव्वारे से गिरता है
इन्द्र-धनुष
बूँदों में
पर नहीं दिखता

ग्रीष्म

दाँत-निपोड़ती हैं
सूखे जोहड़ मे भैंसें

दूर हट कर खड़ा
हिल उठता है नंगा कीकर

उठते हैं धूल भरे बबूले.
झुलसते, उड़े फिरते हैं,
आक के चमकीले फूल.

जोहड के पास हँसता है लाल हँसी,
फूला कँर का झाड़
नकारता है ग्रीष्म का अस्तित्व.

दुम नही हिलती—
जीभ निकल आई है कुत्ते की.

आँखें खोजती है आकाश मे
एक टुकड़ा बादल
चैन कहाँ दे पाती है ?

चील की ऊँची उड़ान
एक टुकड़ा छाँव तलाशते है सब.

वरसात में

वर्षा की फुहारो मे
निर्वस्त्र हो
आँगन में बैठ जाना
लगता है कितना भला
प्यासा वदन
पीता है बूँद-बूँद पानी
बदन की ताप
बुझने लगती है, तिलतिल.

काले बादल के टुकडे
उडे फिरते है
गरज-गरज, इधर-उधर.

धूप छन आती है बादलो से
आँगन के करती है दो टूक
एक धूप · एक छाँव

जीवन की धूप–छाँव
सीती है मेरी काया.

वर्षा

आकाशी चलनी से
छन रहा निरन्तर पानी
भ्रम होता है
वायुयान टकराने का
सामने पहाड़ पर
एक और पहाड़ लद गया है.
जीवन के सुखद क्षणों में
बारिश का एक दिन और जुड़ गया है.

बरसाती दिन

बरसाती तनी रही दिन भर
बरसाती पर टिका रहा
बरसाती दिन.
बादल आये पानी भर
झर-झर झर-झर.

काले आसमान ने
किटकिटाए दाँत चमकदार
पानी-पानी और पानी

लौट आये
झरने-ताल-तलैया के दिन
हरा हो गया हरियाली का मन.

बरसाती पर टिका रहा
बरसाती दिन
दिन भर.

पहाड़ : चित्र दो

: 1 :

पहाड़
धूप की पीताम्बरी ओढ़े
अलसाता उठता है.

: 2 :

वीतरागी विवस्त्र पहाड़ को
महादानी सूरज
पहनाता है भगवा वस्त्र.

: 3 :

सर्द रात में पहाड़
अंधकार का कम्बल ओढ़े
टीबे में पैर छुपा सोता है.

सर्दी की सुबह

सात बजे भी
धुंध भरा अँधेरा है
चाय बिस्तर मे पीता है
कुछ अलसाने के बाद
उठ पड़ा है सवेरा

बिखर गई है आँगन मे
चम्पई धूप

सूरज ने सबको अपनी
सहस्र-किरण-धाराओं से
धूप-स्नान कराया है।

वृद्ध मौत

मेरे बाबा के बाबा से भी बूढ़ा है यह पेड़
कितने वसन्तो से मेले हैं इसके तने
कितनी पुष्ठ थी इसकी बाँहें ?
हर दिन रुनक-भुनक नाचा था यह
मेलों मे कितनों को प्रश्रय दिया था इसने.
बाँध की पाल के नीचे
सूरज कितनी बार हुआ होगा मुग्ध
इसकी श्यामल कोमल कोपलो पर

पीला मुख किए सूरज
उदास मुंह से ताकता है
अब इस बेजान ठूँठ को

कारगार शब्द

मैं शब्दो से कभी कभी पूछता हूँ
क्या तुम किसी विस्फोटक के बने हो ?
तुम्हारा निर्माता क्या तुमसे अधिक शक्तिशाली नही है ?
वह कभी कभी घिघियाया, डरपोक, भयातुर कैसे हो जाता है ?

तुम में एल. एस. डी. युक्त नशा नही है.
सीधी सी बात को कहने में
एक किशोर को क्या प्रौढ नही बना देते हो ?

कभी कभी मैं शब्दो से पूछता हूँ,
क्या तुम उस अफसर/बडे नेता की चापलूसी नही करते ?
जब कि उसकी पवित्रता पर काले धब्बे है अमिट ?
निर्दयी की फुसफसाहट मे जब तुम शरीक होते हो
कितना बुरा लगता है ?

पहाडी ढलानो पर बसे खपरैले मकान,
झुग्गी-झोपड़ी से आती गूंगी आवाज मे
कैसे लगते हो तुम ?

शब्दों से मैं कभी कभी पूछता हूँ,
अपनी बात कहने के सामर्थ्य में
तुम्हारी पकड कहाँ ढीली रह जाती है.
कारगर शब्दों के सम्प्रेषण मे
ढेर सारे अर्ध विराम, विराम और
सवालिया चिन्हो के साथ तुम्हारे बीच
डैश क्यो लग जाता है ?
जो तुम्हारे वजूद को खतरे मे डालने लगता है.
क्या तुम मेरी तरह—
वे सब खतरे उठाने को तैयार नही हो
जो मैं तुम्हारी सहायता मे उठाता रहता हूँ ?